प्रातः क्लास   पिताश्री   मधुबन   25-7-67

ओमशान्ति। सभी को आत्मअभिमानी हो बैठना चाहिए। परम पिता परमात्मा इस शरीर द्वारा हम आत्माओं को सुनाये रहे हैं। तुम बच्चों ने यह तो समझा है शिव की जयन्ती कैसे होती है। ऊँच ते ऊँच भगवान। उनका नाम है शिव। शिव जयन्ती ही मनाते हैं। और जयन्ती वा और नाम नहीं कहते। शिव जयन्ती ही कहते हैं। शिव को ही परम पिता परमात्मा कहा जाता है। पतित पावन सर्व का बाप कहा जाता है। आत्मायें सभी भाई2 हैं। फिर जब सृष्टि रची जाती है तब भाई बहन होते हैं। तुम जानते हो हम भाई2 हैं। फिर हम प्रजापिता ब्रहमा द्वारा भाई बहन बने हैं। सभी कहते हैं हम प्रजापिता ब्रहमा कुमार कुमारियाँ शिव बाबा की सन्तान हैं। शिव बाबा का जन्म देखा? जन्म दिखाए तो उनकी आकूपेशन का पता न पड़े। शिव बाबा का जन्म अलौकिक है। खुद बताते हैं मैं साधारण वृध तन में प्रवेश करता हूँ फिर उनका नाम ब्रहमा रखता हूँ। ब्रहमा का जन्म कैसे, कृष्ण का जन्म कैसे होता है यह कोई को पता नहीं। ब्रहमा का जन्म भारत में मनाते नहीं हैं। शंकर का जन्म भी नहीं मनाते। विष्णु का जन्म मनाते हैं। विष्णु ही लक्ष्मी नारायण हैं ना। नारायण का जन्म मनाते हैं। राधे का नहीं मनाते हैं। शायद राधा पंथी वालों को मालूम है। कृष्ण का तो जन्म मनाते हैं। कृष्ण ही नारायण ठहरे ना। तो विष्णु का मुख्य पार्ट हो गया। बाकि ठहरी लक्ष्मी। जो पहले राधे हैं। यह सब बातें समझने की है। अब तुम बच्चों का ईश्वर का भी अंत मिलता है। बच्चों का ड्रामा के एक्टर्स का तो मालूम होना चाहिए ना। कई कह देते फलाणा वायु से, फलाणा नासिका से पैदा हुआ। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, जनावरों की तो बात ही नहीं। बाकि जो सच्चे2 हैं वह प्रत्यक्ष ही हैं। शिव बाबा भी प्रत्यक्ष है ना। परम पिता परमात्मा है। उनकी महिमा है ज्ञान का सागर है, पतित पावन है। महिमा आत्मा की ही महिमा होती है। शरीर तो खतम हो गया। नेहरू की आत्मा शरीर द्वारा प्राईम मिनिस्टर था। बलिहारी आत्मा की है। यह तुम जानते हो। वह लोग महिमा गाते हैं शरीर की। शिव बाबा का तो शरीर है नहीं। वह ज्ञान का सागर था। कहेंगे नेहरू की भी आत्मा बहुत अच्छी थी। उनमें अक्कल अच्छा था। शरीर बिगर तो कुछ हो नहीं सकता। शरीर के साथ ही आत्मा की महिमा होती है। दुनिया के मनुष्यों को तो शरीर का ही बुधि में है। अभी तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनना है। मुख्य आत्मा की ही पूजा होती है। शिव बाबा के मंदिर बनाते हैं तो उनके साथ सालिग्राम भी बनाते हैं जिनकी पूजा करते हैं। जब पूजा होती है तो शिव बाबा और सालिग्राम दोनों की इकठी होती है। क्यों कि इस समय मैं भी रूहानी सेवा कर रहा हूँ। तत त्वम्। तुम भी कर रहे हो। अपन को आत्मा समझ शरीर द्वारा सर्विस करनी है। बाप है निराकार फिर उनको साकार में आना पड़ता है। बाबा कहते हैं मुझे साकारी तन लेना पड़ता है। ब्रहमा के जन्म का भी अभी तुमको पता पड़ा है। त्रिमूर्ति भी कहा जाए तो भी मालूम होना चाहिए। शिव बाबा आते हैं। शंकर के लिए तो समझाया जाता है चित्र तो है परन्तु वह कुछ करते तो नहीं हैं। ऐसे भी नहीं कहेंगे परमात्मा विनाश करते हैं या कराते हैं। बाप थोड़े ही बच्चों का विनाश करेंगा वा करावेंगा। राय देने वाले भी फंस जाते हैं। तो यह बाप समझाते हैं शंकर के उपर इतना पाप क्यों रखेंगा। आंख खोले और विनाश हो। ऐसे थोड़े ही हो सकता है। यह भी गपोड़ा। यह सब भक्ति मार्ग के अथाह चित्र हैं। है सभी रांग। राइट क्या है वह भी समझाते हैं। शिव शंकर कहते हैं शिव की जयन्ती हुई तो साथ में शंकर की भी हो गई। शंकर की जयन्ती मनाते हैं? दिखाते हैं शंकर और पार्वती। यह भी बाबा ने समझाया है पार्वतियाँ तुम हो। अमर कथा सुन रही हो अमर नाथ द्वारा। अमर नाथ शंकर नहीं है जो पार्वति को कथा सुनाते हैं। तुम बच्चों का तो शिव बाबा सुनाते हैं। नाम रख दिया है शिव शंकर। अमर नाथ एक हुआ। शिव शंकर तो नाम है नहीं। शिव और शंकर दोनो अलग2 हैं। शिव निराकार, शंकर आकारी। तो दोनो को ईकठा रखना रांग हो गया ना। बाप कहते हैं इन बातों को अच्छी रीत समझो। तुम्हारी बुधि में आता है कि शिव अलग निराकार है। शंकर को कब निराकार ज्ञान का सागर पतित पावन नहीं कहेंगे। तब क्या कहेंगे? पतित पावन भी शिव है। साथ में भी वह ले जाते

हैं।शंकर क्या करते हैं।परन्तु उन्हों ने चित्र बनाये दिया है।यह भी बाबा ने समझाया है त्रिमूर्ति शिव कहना चाहिए। विष्णु की जयन्ती का भी किसको पता नहीं।विष्णु का जन्म कब हुआ?विष्णु का जन्म सो कृष्ण का जन्म।राधे का जन्म कृष्ण से 4-5 वर्ष पीछे हुआ होगा।जन्म तो माँ के गर्भ से होता है ना।कृष्ण की माँ का क्या नाम है?जशोदा कहते हैं।देवकी का नाम गुम हो जाता है।भक्ति मार्ग में तो जिसने जो कहा चला लेते हैं।तो अब बच्चों को बुद्धि से काम लेना चाहिए।उनकी मान भी थी।बाकि आठवां गर्भ की कोई बात नहीं।यह भी एक कृष्ण की बदनामी की है।यह सब भक्ति मार्ग की छी2 बातें हैं इसलिए बाप कहते हैं भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग है।मनुष्य जो सुनते वह सत2 कहते रहते। तुम्हारी बात को मानते नहीं।कहते इन्होंने फिर कहाँ से लाया।और यह तो बाप ज्ञान का सागर है। जिसको आद मध्य अंत का नालेज है। और कोई नहीं जानते।बाप अगर जाने तो रचता को भी जानें। बच्चे बाप को भी जानें। बाप है बेहद का मालिक। बाकि सभी भाई2 हैं।उनमें भी जो सन्यासी हैं वह ऊंच कहे जाते हैं।क्योंकि पवित्र रहते हैं।पंडित आद शास्त्र बहुत पढ़ते हैं।वह भी नहीं जानते हैं।बाप खुद ही आय बताते हैं कि मैं कैसे जन्म लेता हूं।तुम बच्चे यह भी जान गये हो ब्रह्मा का जन्म कैसे होता है। और कोई बताये न सके।अजमेर में जाकर तुम पूछो।ब्रह्मा को जन्म देने वाला कौन?सिर्फ त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते।बस ईश्वर की रचना है।परन्तु रचना कैसे होती है यह भी जानना चाहिए।शंकर तो काम का नहीं है।बाकि ब्रह्मा का जन्म सिद्ध है। निराकार बाप कहते हैं मैं इन में प्रवेश कर इनका नाम ब्रह्मा रखता हूं।ब्राह्मण ऊंच ते ऊंच चोटी भी चाहिए ना। तब तो देवता बनेंगे।शूद्र देवता बन न सकें।वह है शूद्र।तुम हो ब्राह्मण।शूद्रों को ही एडाप्ट कर ब्राह्मण बनाते हैं।प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे जरूर मुखवंशावली होंगे। बाप बतलाते हैं मैं ब्रह्मा मुख कमल से इनको अपना बनाता हूं।तो दोनो के बने।वर्सा शिव बाबा का है।ब्रह्मा का नहीं। बहुत जन्मों के अंत के जन्म के भी अंत में बाप ने इस में प्रवेश किया और नाम रखा ब्रह्मा।अब ब्रह्मा सो फिर विष्णु कहा जाता है। कृष्ण ही 84 जन्मों बाद फिर साधारण तन बनते हैं।उनमें बाबा प्रवेश करते हैं।फिर भी पहली वाली आत्मा के तन में प्रवेश करते हैं।सिर्फ इनको तो नहीं समझते।एक सिर्फ यह सुनेंगे क्या?आवाज करते हैं।तुम भी सुनते हो यह भी सुनते हैं।मुल बात एक है।बाबा तो है ना।उन से हम को वर्सा मिलता है। उनका रथ है यह ब्रह्मा का।हम ब्राह्मण हैं। बाप से राजयोग सीख रहे हैं। बाप को जरूर याद करना है।राजयोग भगवान शिव ने सिखाया था।कृष्ण को भी नहीं सिखाया।कृष्ण के बहुत जन्मों के अंत के जन्म की जो आत्मा पतित बनी है उनमें प्रवेश किया।फिर उनका नाम बदली किया। रखा।वह भी लिस्ट होनी चाहिए।250 के नाम आये थे।वह लिस्ट छपा कर रखनी चाहिए।जीते जी मर कर जन्म लिया तो जरूर बाप नाम रखेंगे ना। इसलिए बाप को भिरगु ऋषि भी कहते हैं।जन्म पत्री भी जानते हैं।नाम देने वाला है।फिर देखा ठहरते नहीं हैं।तो नाम देना बंद कर दिया। ब्रह्मा कुमार कुमारी बन कर फिर जाय शूद्र बने। इस लिए माला बनाना भी बंद कर दिया।क्योंकि सब वारिस तो नहीं बनें हैं ना।वो तो वारिस बने घर बार छोड़ आय बाबा के बने।भट्टी वालों का नाम रख दिया।अभी बोलते हैं तो भी नहीं रखाते हैं। हां कोई बहुत पक्का हो और पूछे तो नाम दे भी सकते हैं परन्तु किसके उपर विश्वास करें। दश वर्ष रहनेवाले ध्यान में जाय मम्मा बाबा को भी ड्रील कराते थे हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डैरेक्शन देते थे। कितना मर्तबा था।मम्मा बाबा भी उनसे सिखते थे। आज वह भी है नहीं।उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था।सीढ़ी का, 84 जन्मों का ज्ञान भी अभी तुमको मिला है। आगे मिलजा होता तो सीढ़ी बनाय लेते।जैसे2 ज्ञान मिलता गया है चित्र बनाते गये हैं।इनके बाद भी कितने चित्र बनावेंगे। अभी तुम्हारे बुद्धि में यह सब बातें हैं। कृष्ण की आत्मा 84 जन्म ले अभी आय पतित बनी है। इन में प्रवेश किया तो यह उनका बन गया।बाबा ने भिखारी का जन्म का नाम छोड़

निर्विकारी जन्म का नाम रख दिया। सन्यासी नाम बदलते हैं ना। वह भी कोई फट से नहीं निर्विकारी बन जाते। बहुतों को फिर घर बार याद आता है तो फिर गृहस्थी जीवन में लौट आते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम बाप के बने हैं। बाप कहते हैं तुम मेरे बने हो तो तुम्हारा परिवार ब्राह्मणों का होगा। छोटे2 परिवार के साथ भी रहना पड़ता है। कोई2 अलग भी हो सकते हैं। परन्तु जब ममत्व छूटे। क्योंकि इसमें परहेज भी बहुत होती है ना। मुख्य बात है याद की। भोजन पर बैठते हैं फिर याद भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं जितना समय बाबा याद में रहो। तो कोई असर नहीं होगा। याद भूले तो असर जरूर होगा। बाबा अपना बतलाते हैं मैं भी भूल जाता हूँ। बाबा तो मेरे साथ लटका हुआ है। तो भी भूल जाता हूँ। बाबा मेरे साथ इकठा है यह भी याद नहीं रहती। मेरा शरीर लिया है। मैं लैंड लार्ड हूँ। किराये पर मकान लिया। मार्ई भी रहती थी। याद तो रहेगा ना। किराये पर लिया है। वह समझेंगे हमारा मकान है। यह भी कहेंगे इनका मकान है। समझता भी हूँ मेरे नजदीक बाबा बैठा है। इतनी नजदीक कोई के नहीं होता। इतना नजदीक होते भी भूल जाता हूँ। अगर भूलूँ नहीं फिर तो अभी ही कर्मातीत अवस्था हो जाए। शरीर न रहे। बाबा भाग जाय। जानता भी हूँ बाबा के साथ बैठा हूँ। एक रथ पर दो आत्मायें बैठी हुई हैं। इतना साथ होते भी भूल जाता हूँ। माया प्रबल है ना। मनुष्य कर्मातीत अवस्था को पाय लिऊँ बच्चे पिछाड़ी रह जाय यह तो ला नहीं है। मैं जानता हूँ ना। टाइम भी पड़ा है। यह सब विचार चलती है। मेरे रथ में बाबा बैठा है। फिर उनको हम भूल कैसे सकते हैं। बहुत मेहनत करता हूँ फिर भी भूल जाता हूँ। माया भुलाये देती है। तुम्हारे लिए तो बाबा से भी सहज है। इनको तो कितनी ख्यालात रहती है। कितने हंगामे हो जाते हैं। सारी दुनिया तुम्हारी दुश्मन है। क्योंकि तुम सबका दुश्मन हो। कहते हो यह अनेक धर्म आद सब खतम हो जावेंगे। फिर हम राज्य करेंगे। तो दुश्मन ठहरे ना। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है देवी देवता राज्य की। बाकि सब राज्य खलास हो जावेंगे। सभी के आँखों में अज्ञान की धूल पड़ जावेंगे। हमारी आँखों में है ज्ञान सुरमा। हम विजय पाते हैं। वह कुम्भकरण के नींद में सोये रहते हैं। कोई जाग कर फिर सो जाते हैं। ठंडे2 हो जाते हैं। फिर भी क्लास में आ जाते हैं। खुद खुद कहते हैं हम कुछ नहीं समझते हैं। फिर क्लास में चले जाते हैं। मना करने से फिर दुश्मन बन जाते हैं ब्रह्मा कुमारियों की। अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। ऐसे2 कर्म करते हैं जो कोई भी न समझे कि इनको भगवान पढ़ाते हैं। प्रजा तो बहुत बनती है। महाराजा महारानी बनने की तो अवस्था चाहिए। कितना शीतल बनना चाहिए। देखो रमेश को सारा दिन सर्विस करने की तात लगी हुई है। बहुत धाडा मारते हैं। अच्छे2 को निमंत्रण देते हैं। नाम ही ऐसे लेते जो छूटेली है। सर्विस भी कर सके। जगदीश है, इन्द्र है, मोहिनी है कोई बंधन नहीं है। ब्रह्मचारी है। सर्विस करते रहते हैं। मन्सा भी गुप्त सर्विस, वाचा भी गुप्त। कर्मणा भी गुप्त। कर्मणा अर्थात बीज आद बोना। दान करना, वह गुप्त। बाकि वाचा का मालूम पड़ता है। मन्सा है गुप्त। बाकि वाचा के लिए भाषण मारते हैं। सेमीनार आद करते हैं। बाबा भी कहते हैं मैं वाचा तो बहुत सर्विस करता हूँ। डैरेक्शन बहुत देता हूँ। अच्छा2 म्युजियम बनाओ। तुम्हारे पास ढेर राजायें आद आवेंगे। सब की कानों में पड़ेगा। सब देख कर जाय औरों को सुनावेंगे। यहाँ समझानी तो बहुत अच्छी मिलती है। सृष्टि की आद मध्य अंत का ज्ञान सुनाते हैं। बाप का परिचय देते हैं। गवर्मेन्ट को भी कहते हैं 10 वर्ष के अन्दर हम यहां देवी राज्य स्थापन करेंगे। न करें तो आप यह मकान आद सब ले लेना। लड़ना चाहिए ना। बोलो दूसरा कोई ऐसा नहीं कहेगा कि हम 10 वर्ष के अन्दर यह कार्य न करें तो मकान आप का। तुम लिखत में देते हो। तो भी समझते नहीं। ऐसा कोई लिख कर दे न सके। हम तो 5000 ब्राह्मणों की सही लेकर देते हैं। मुख्य जो हैं उनकी भी सही देते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा और क्या सही करेंगे। मालिक तो मैं हूँ ना। सभी ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं ना। और कोई मालिक हो न सके। बाबा युक्ति भी देते हैं फिर भी कोई हिम्मत नहीं करते। योग पूरी कर भी नहीं। मूल बात है देहाभिमान। इसलिए कोई काम नहीं हो सकता। देही अभिमानी हो तब बल मिले। अच्छे वकील की पकड़ो। जो हिम्मत कर आलीशान करे। परन्तु पुरुषार्थ ही नहीं करते। अच्छा ओम शान्ति